भारत में उद्योग का वर्तमान एवं भविष्य : एक अध्ययन

Guman Singh Jatav

पर्यटन आज विश्व का सबसे बड़ा उद्योग बन गया है। यह अनेक सुविधाओं, सेवाओं और उद्योगों का समूह है। इससे परिवहन, होटल, रेस्टोरेंट, दुकानों, मनोरंजन आतिथ्य उद्योगों को बढ़ावा मिलता है। यह पर्यटक के द्वारा किए जाने वाले व्यय का योग है, इसी से पर्यटन को आर्थिक लाभ पहुँचता है। पर्यटन में आमदनी बढ़ाने और रोजगार पैदा करने की प्रभूत क्षमता है। यह कम लागत का व्यवसाय है, जिसमें संगठित और असंगठित दोनों तरह के श्रमिकों को रोजगार मिलता है। यह एक सघन श्रम वाला उद्योग है। पर्यटन उद्योग सकल घरेलू उत्पाद (जी0डी0पी0), विदेशी मुद्रा अर्जन और रोजगार सृजन के क्षेत्राों में योगदान की अपनी संभावना के कारण क्षेत्र के आर्थिक विकास के प्रमुख सार थी के रू५ में उभरा है। यात्रा और पर्यटन क्षेत्रा से सीधे जुड़े परिवहन और आतिथ्य उद्योग के अलावा आपूर्ति कर्ताओं एवं भागीदारों को भी अप्रत्यक्ष लाभ पहुँचता है। इन उद्यमों में अधिक संख्या में महिलाओं, युवाओं तथा ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों के लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। यात्रा एवं पर्यटन उद्योग में लघु एवं मध्यम वर्ग के उद्योगों की संख्या अच्छी खासी है और इससे न केवल उद्यमिता को प्रोत्साहन मिलता है, बल्कि यह विविध प्रकार के रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। यह कुशल, अर्द्धकुशल और अकुशल लोगों को रोजगार प्रदान करता है। पर्यटन से कस्टम, ट्रैवल, एजेंसी, एयरलाइंस, टूर ऑपरेटर्स, होटल उद्योग एवं पर्यटक गाइड के रूप में रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। पर्यटन रोजगार के अवसर प्रदान करने के साथ – साथ प्रादेशिक असमानता एवं गरीबी को दूर करने तथा मानव विकास में एक प्रमुख साधन के रू५ में लगातार विकसित हो रहा है, इससे राष्ट्रीय एकता एवं अंतरर्राष्ट्रीय सद्भाव को बढ़ावा मिलता ही है, साथ ही साथ स्थानीय कला, संस्कृति हस्तशिल्प एवं परंपरागत वस्तुओं का भी प्रचार–प्रसार होता है। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र अथवा देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में पर्यटन का प्रमुख योगदान हो सकता है।

बीज शब्द : हृदय योजना, ई–वीजा पर्यटन उद्योग, स्वदेश दर्शन, प्रसाद योजना,

भारत में पर्यटन उद्योग का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन :–

पर्यटन तृतीयक क्रियाकलाप है, जिसमें पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वस्तुओं और सेवाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें घूमने–फिरने, चिन्तन–मनन के साथ अन्य तत्त्व जैसेः परिवहन के साधन ,आवासीय सुविधाएँ और खान–पान आदि भी स्वतः ही जुड़ जाते हैं। अतः पर्यटन एक ऐसा व्यवसाय है, जिसमें दूसरे उद्योगों के उत्पादों के मध्य प्रतिस्पर्द्धा न होकर उत्पादों एवं वस्तुओं के बीच सौहार्द्र, समन्वय तथा सम्मान की भावना निहित होती है।

पर्यटन अवसंरचना उद्योगों, फुटकर व्यापार तथा शिल्प उद्योगों को पोषित करता है। बरकार्ट के अनुसार, पर्यटन उद्योग विभिन्न प्रकार के व्यापारों और संगठनों का समुच्य है तथा इसमें अर्थव्यवस्था के वस्तुतः सभी क्षेत्र शामिल हैं। पर्यटन उद्योग अन्य उद्योगों से भिन्न है। इसका उत्पाद वस्तु–निर्माण उद्योग जैसा नहीं होता है। इसके विपणन की प्रक्रिया भी अलग होती है। पर्यटन विपणन में अमूर्त विचारों का क्रय–विक्रय होता है। अन्य उद्योगों की भाँति पर्यटन में भी मांग की उत्पत्ति होती है। यह विभिन्न उद्योगों हेतु बाजार उपलब्ध कराता है। यह एकाकी उद्योग न होकर बल्कि एक समन्वित उद्योग है क्योंकि इसमें विभिन्न क्रियाएँ और सेवाएँ जुड़ी होती हैं, इसलिए इसे मिला–जुला उद्योग कहते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :–

इस शोध–प्रपत्रा का मुख्य उद्देश्य भारत में विकसित हो रहे पर्यटन उद्योग का अध्ययन तथा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक प्रवाह एवं विदेशी मुद्रा अर्जन का विश्लेषण करना है।

1. भारत में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक प्रवृत्ति का अध्ययन।
2. विदेशी मुद्रा अर्जन का विश्लेषण
3. भारत तथा विश्व के प्रमुख देशों से तुलनात्मक विश्लेषण करना शामिलहै।

आँकड़ों का संकलन एव ंअध्ययन प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध प्रपत्र के अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए द्वितीयक प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। इन द्वितीयक आँकड़ों का संग्रहण पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'पर्यटन सांख्यिकी एट ए ग्लांस' के वार्षिक प्रतिवेदन के आधार पर किया गया है। अध्ययन के उद्देश्य को स्पष्ट करने हेतु आँकड़ों के विश्लेषण में सरल और व्यावहारिक सांख्यिकीय विधियों एवं सारणी का प्रयोग किया गया है। यहाँ अध्ययन का विधि तंत्रा विश्लेषणात्मक है।

पर्यटन उद्योग का विश्लेषण :–

अपनी भौगोलिक अवस्थिति, भौतिक तथा सांस्कृतिक विविधता, आकर्षक स्थलों और ऐतिहासिक स्मारकों की दृष्टि से भारत में पर्यटन का अपार संभावनाए ंहैं, परंतु इसका विश्व पर्यटन में अंशदान अत्यल्प है। इंडिया टूरिज्म स्टैस्टिक एट एग्लांस 2019 के अनुसार भारत में विदेशी पर्यटकों का केवल 1.24 प्रतिशत भाग ही आता है, इस दृष्टि से भारत का विश्व पर्यटन में 22वाँ स्थान है। WTTC के अनुसार देश की सकल घरेलू उत्पाद जी0डी0पी) में पर्यटन की योगदान 9.2 प्रतिशत ¼16.91 लाख करोड़) तथा रोजगार में 8.10 प्रतिशत ¼42.673 मिलियन) है।

विश्व के प्रमुख देशों में विदेशी पर्यटकों की तुलनात्मक विवरण–

क. सं.	देश	पर्यटक आगमन (2016)		विदेशी मुद्रा प्राप्ति/कमाई (2017)	
		मिलियनमें	प्रतिशतमें	यू0एस0 बिलियन	प्रतिशतमें
1	फ्रांस	82.60	6.70	6.70	4.56
2	सं0रा0अ0	75.90	6.10	210.70	15.82
3	स्पेन	75.30	6.10	68.00	5.01
4	चीन	59.30	4.80	35.60	2.67
5	इटली	52.40	4.20	44.20	3.32
6	यू0के0	35.80	2.90	43.90	3.30
7	जर्मनी	35.60	2.90	39.80	2.99
8	मैक्सिको	35.10	2.80	0.00	0.00
9	थाईलैण्ड	32.60	2.60	57.50	4.32
10	तुर्की	30.30	2.40	0.00	0.00
11	भारत	14.60	1.24	27.30	2.05

Source: India Tourism Statistics at a Glance, 2018

सारणी–2 से ज्ञात होता है कि वर्ष 2019 में 10.93 मिलियन विदेशी पर्यटकों का आगमन भारत में हुआ, जिससे 211661 करोड़ रुपये की प्राप्ति हुई। विश्व के प्रमुख देशों में विदेशी पर्यटक आगमन एवं विदेशी मुद्रा की कमाई का विवरण सारणी)1½ में दी गई है, जिससे पता चलता है कि विश्व के प्रमुख देशों–संयुक्त राज्य अमेरिका, स्पेन, फ्रान्स, थाइलैण्ड, इटली यू0के0, आस्ट्रेलिया, चीन, जापान जर्मनी, मैक्सिको, तुर्की आदि देशों में विदेशी पर्यटकों की संख्या तथा धनोपार्जन (विदेशी मुद्रा कमाई दोनों में भारत से काफी अधिक है।

भारत में आधुनिक रूप से पर्यटन की शुरुआत 1950 के दशक में हुई, जब देश में योजनाबद्ध विकास शुरू हुआ। उसके बाद भारतीय पर्यटन ने चरणबद्ध रूप से क्रमशः उन्नति की है जैसा कि सारणी–2 से स्पष्ट होता है। इस बात की पुष्टि होती है कि चरणबद्ध विकास के साथ ही भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन में निरंतर वृद्धि हुई है। यद्यपि 1984, 1990, 1991, 1993, 1998, 2001, 2002, 2009 कुल 8 वर्षों में इनकी संख्या में थोड़ी बहुत कमी देखने को मिलती है, परंतु वर्ष 2010 से इनकी संख्या में निरंतर वृद्धि हुई दिखती है।

सारणी–2

भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन

वर्ष	पर्यटक संख्या	वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)	वर्ष	पर्यटक संख्या	वार्षिक वृद्धि दर
1951	16380		1998	2358629	¼-0.7)
1961	139804		1999	2481928	5.2
1971	300995		2000	2649378	6.7
1981	1279210	2	2001	2537282	¼-4.2)
1982	1288162	0.7	2002	2384364	¼-fL0)
1983	1304976	1.3	2003	2726214	14.3
1984	1 193752	-8.5	2004	3457477	26.8
1985	1259384	5.5	2005	3918610	13.3
1986	1451076	15.2	2006	4447 167	13.5
1987	1484290	2.3	2007	5081504	14.3
1988	1590661	7.2	2008	5282603	4
1989	1736093	9.1	2009	5167699	¼-2.2)
1990	1707158	-1.7	2010	5775692	11.8
1991	1677508	-1.7	2011	6309222	9.2
1992	1867651	1 1.3	2012	6577745	4.3
1993	1764830	-5.5	2013	3967601	5.9
1994	1886433	6.9	2014	7679099	10.2
1995	2123683	12.6	2015	8027133	4.5
1996	2287860	12.6	2016	8887425	10.7
1997	2374094	3.8	2017	10040000	14
			2018	10557976	5.2
			2019	10930355	3.5

Source: India Tourism at a Glance, 2020

भारत में राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002 के पश्चात आधारभूत में विकास व विस्तार निजी क्षेत्रों का पर्यटन में बढ़ावा और पर्यटकों की सुरक्षा आदि पर विशेष ध्यान देने से वर्ष 2002 के बाद पर्यटन क्षेत्रा में तीव्र गति से विकास हुआ, जिससे विदेशी पर्यटकों की संख्या में तीव्र अभिवृद्धि (केवल वर्ष 2009 को छोड़कर) हुई। वर्ष 1951 में कुल विदेशी पर्यटक आगमन 16380 थी, जिससे 7.70 करोड़ रुपए विदेशी मुद्रा की प्राप्ति हुई थी, जो वर्ष 2010 में बढ़कर 57.76 लाख पर्यटक और 68889 करोड़ रू0 विदेशी मुद्रा प्राप्ति हुई। वर्ष 2019 में यह संख्या बढ़कर 1 करोड़ 9 लाख 30 हजार पर्यटक और विदेशी मुद्रा की कमाई 211661 करोड़ रू0 हो गई है।

सारणी–3

भारत में पर्यटन से विदेशी मुद्रा प्राप्ति (1999–2019)

वर्ष	विदेशी मुद्रा प्राप्ति (करोड में)
1999	12951
2000	15626
2001	15083
2002	15064
2004	27944
2005	33123

2006	39025
2007	44360
2008	51294
2009	53700
2010	64889
201 1	77591
2012	94487
2013	107671
2014	123320
2015	135193
2016	154146
2017	177874
2018	194881
2019	211661

Source: India Tourism at a Glance, 2020

सारणी 2 –चित्र से स्पष्ट होता है कि वर्ष 1951 से लेकर 2001 के बीच भारत में विदेशी पर्यटक प्रवाह (आगमन) की गति धीमी थी।वर्ष 2002 के पश्चात् भारत में विदेशी पर्यटक प्रवाह (आगमन) की गति में अत्यधिक वृद्धि हुई है।इसका मुख्य कारण भारत मेंपर्यटन के आधारभूत संरचनाओं में सुधार और व्यवस्थित ढ़ंग से पयर्टन स्थलों का प्रचार–प्रसार (पर्यटन नीति 2002) है।

सारणी–4

विश्व के 10 प्रमुख देशों से पर्यटक आगमन, 2019

क. सं.	देश	विदेश पर्यटक आगमन	प्रतिशत
1	**बांग्लादेश**	2577727	23.58
2	**यू0एस0ए0**	1512032	13.83
3	**यू0के0**	1000292	9.15
4	**आस्ट्रेलिया**	367241	3.36
5	**कनाडा**	351859	3.22
6	**चीन**	339442	3.11
7	**मलेशिया**	334579	3.06
8	**श्रीलंका**	330861	3.03
9	**जर्मनी**	264973	2.42
10	**रूस द्धरसियन फेडरेशन)**	251319	2.3
प्रमुख देश कुल)		7330325	67-06
अन्य देश		3600030	32-49
योग		10930355	100-00

Source: India Tourism Statistics at a Glance, 2019

सारणी–4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2019 में भारत में 67.06 प्रतिशत विदेशी पर्यटकों का आगमन विश्व के केवल 10 देशों से हुआ। इसमें बांग्लादेश 23.58 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान है। इसके बाद अवरोही क्रम में संयुक्तराज्य अमेरिका (13.83%), युनाइटेड किंगडम (9.15%) ऑस्ट्रेलिया (3.36%) कनाडा (3.22%) चीन (3.11%) मलेशिया (3.06%) श्रीलंका (3.03%), जर्मनी (02.42%) रूसी फेडरेसन (2.30%) सम्मिलित हैं। इनमें से प्रत्येक देश से भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या 2

लाख से अधिक

पायी गई है जब कि बांग्लादेश, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम से आने वाले पर्यटकों की संख्या 10 लाख से अधिक है। इसी प्रकार भारत आने वाले 50 प्रतिशत से अधिक पर्यटक पश्चिमी यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका तथा एक चौथाइ दक्षिणी एशियाई देशों से आते हैं।

सारणी–2 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि 1981 से 2002 तक विदेशी पर्यटकों की वार्षिक वृद्धि दर परिवर्तन धनात्मक और ऋणात्मक होता रहा है क्योंकि इन वर्षों में देश में राजनीतिक अस्थिरता, आतंकवादी घटनाएँ एवंराज्य स्तर पर दंगों जैसी घटनाएँ चरम पर थी, जिससे पर्यटन उद्योग को भारी क्षति उठानी पड़ी। वर्ष 2002 में पर्यटन गंतव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसमें नीति की घोषणा की गई। यहाँ अन्य बातों के अतिरिक्त देश को विश्व स्तरीय गंतव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे विकासमान विश्व यात्राा और व्यापार का लाभ उठाया जा सके और पर्यटन के लक्ष्य के रूप में देश की उन विस्तृत संसाध्नों का उपयोग किया जा सके।

पर्यटन नीति (2002) का प्रभाव था, कि वर्ष 2003 से निरंतर वार्षिक वृद्धि दर लगभग 10 प्रतिशत से अधिक रहा है। वर्ष 2002 में कुल विदेशी पर्यटकों के आगमन की संख्या 23 लाख 84 हजार थी, यह बढ़कर वर्ष 2019 में रू0 एक करोड़ 9 लाख तीस हजार हो गई है।

पर्यटन क्षेत्रा में सुधार के उपाय :–

भारत में पर्यटन उद्योग को ठीक ढ़ग से विकसित करना हो तो हमें इसके लिए ठोस उपाय करने होगें। पर्यटन स्थलों को स्वच्छ/स्वस्थ रचना, गन्तव्य तक पहुँच को सुगम एव आकर्षक बनाना, पर्यटकों हेतु आवास, भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था करना, पर्यटन स्थलों को मनोरंजन पूर्ण बनाना, सड़क एवं संचार व्यवस्था को चुस्त–दुरूस्त रखना, पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्यटन स्थलों/केन्द्रों का सही रूप से प्रचार–प्रसार करना आदि कुछ ऐसे आवश्यक उपाय हैं जिन्हें करके देश के पर्यटन उद्योग को विकसित किया जा सकता है। इसके साथ ही पर्यटन क्षेत्रा में निजी उद्यमियों को निवेश हेतु प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है, क्योंकि केवल एक मात्रा सरकारी तंत्र कारगर नहीं हो सकते हैं। सरकारी कार्यक्रमों एवं योजनाओं को बनाने तथा क्रियान्वित करने में भ्रष्टाचार आदि कई कारणों से लम्बा समय लग जाता है जो पर्यटन उद्योग की अभिवृद्धि और विकास को शिथिलकर देता है।

स्रकारी प्रयास :–

भारत की वृहद् भौगोलिक संरचना तथा समृद्ध ऐतिहासिक विरासत के कारण यहाँ पर्यटन क्षेत्रा के विकास की पर्याप्त सम्भावनाएं हैं। इन्हीं कारणों से भारत सरकार द्वारा इस क्षेत्रा में सुधार हेतु कई योजनाओं को लागू किया गया है। इन प्रयासों को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत रखा जा सकता है–

1. देश में पर्यटन सर्किट विकास हेतु 'स्वदेश दर्शन योजना', विरासत स्थलों के विकास हेतु 'हृदय योजना' तथा धार्मिक पर्यटन स्थलों के विकास हेतु 'प्रसाद' योजना लाई गयी है। इसके अतिरिक्त पर्यटन स्थलों पर रोपवे के निर्माण तथा रेलवे स्टेशनों और लॉजिस्टिक पार्कों के आस–पास की वाणिज्यिक भूमि के विकास पर बल दिया गया है।
2. 2. विदेशी पर्यटकों के आगमन को सरल बनाने पर बल देते हुए भारत सरकार ने 166 देशों के लिए 'ई–वीजा (इलेक्ट्रानिक वीजा व्यवस्था की शुरूआत की है। ध्यातव्य है कि इसकी अगली कड़ी के रू में हाल ही में हुए मंत्राी स्तरीय सम्मेलन में पर्यटन मंत्राालय द्वारा ई–वीजा इलेक्ट्रानिक वीजा शुल्क में कमी का प्रस्ताव किया गया है।
3. प्रस्तावित योजना के अनुसार एक नये 5–वर्षीय वीजा योजना की घोषणा की गई और ई–वीजा शुल्क को अल्पकालिक के साथ–साथ दीर्घकालिक पर्यटक ई–वीजा योजना के विकल्प के साथ रखा गयाहैं।
4. उल्लेखनीय है कि इस दिशा में आगे बढ़ते हुए सरकार ने कुछ समय पूर्व अण्डमान–निकोबार द्वीप समूह में विदेशियों (अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक को पहुँच के 24 घण्टे के अन्दर, विदेशी पंजीकरण कार्यालय में पंजीकरण कराने की बाध्यता को समाप्त किया गया।

5. पर्यटन मंत्रालय अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों का भी इस प्रकार से विकसित कर रहा है कि वे सुगम, सुरक्षित और आकर्षक पर्यटक स्थल बन सकें।
6. भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने 22–24 नवम्बर 2018 को त्रिपुरा के अगरतला में अन्तर्राष्ट्रीय का आयोजन किया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य पूर्वोत्तर राज्यों में पर्यटन बढ़ाना है।
7. सरकार ने प्रमुख पर्यटन स्थलों के आधारभूत संरचना के विकास और रख–रखाव पर अधिक ध्यान दिया है। 'स्वदेश दर्शन' और 'प्रसाद' जैसी योजनाओं की शुरूआत की गई है, जो देश में पर्यटन से जुड़ी आधारभूत अवसरंचना विकसित करेंगी।
8. धरोहर गोद लो' योजना के द्वारा किसी विरासत को कॉर्पोरेट जगत आदि को गोद दिया गया है। का उद्देश्य लोगों में अपनी विरासत के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करके उन्हें से जोड़ना है।
9. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय धरोहरों को लोकप्रिय बनाने हेतु 'द हेरिटेजट्रेल' भारतीय को अपने देश के प्रति जागरूक करने के लिए 'देखो अपना देश' नाम से पर्यटन पूर्व का अनुष्ठान तथा राज्यों के विशेष स्थलों में पर्यटन समारोह 'पर्यटन सभी के लिए' का आयोजन किया गया। इसके आलावा पर्यटन एवं शासन स्तर पर कार्यशाला का आयोजन भी किया जा रहा है।
10. हाल ही में भारत सरकार द्वारा 'अतुल्य भारत' पर्यटक सुविधा प्रदाता प्रमाण–पत्रा (Incredible India Tourist Facilitator Certification-IITFC)पोर्टल प्रारम्भ किया गया।
11. IITFC कार्यक्रम देश के नागरिकों के लिए भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय की एक डिजिटल पहल है, ताकि सभी नागरिक तेजी से विकसित हो रहे हैं, पर्यटन उद्योग का हिस्सा बन सकें। यह एक ऑनलाइन कार्यक्रम है जिसके तहत् कोई भी व्यक्ति पर्यटन स्थल, समय और सुविधा आदि की जानकारी प्राप्त कर सकता है।
12. ठसके अतिरिक्त सरकार ने 'अतुल्य भारत' (Incredible India) के नये पोर्टल का हिन्दी वर्जन भी प्रारम्भ किया। ध्यातव्य है कि पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 'अतुल्य भारत' का ब्रांड एम्बेसडर भी बनाया गया है।

चुनौतियाँ :–

भारत में पर्यटन की अपार सम्भावनाएँ हैं, परन्तु दुर्भाग्यवश इन सम्भावनाओं का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाया है। यह एक प्राकृतिक और सांस्कृतिक विविधता वाला राष्ट्र है, जहाँ विश्व पर्यटन में अंशदान अत्यल्प है। एशिया का थाईलैण्ड जैसा छोटा सा देश भारत की तुलना में दुगने से अधिक विदेशी पर्यटक आगमन एवं मुद्रा का अर्जन करने में सक्षम है। भारत सरकार द्वारा पर्यटकों एवं पर्यटन उद्योग हेतु प्रदान किए जाने वाले उपरोक्त सुविधाओं के बावजूद एक विकसित पर्यटन तंत्रा के समक्ष विविध चुनौतियाँ विद्यमान हैं।उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

1. आधारभूत ढ़ाँचा का अभाव भारतीय पर्यटन तंत्रा के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। पर्यटन उद्योग से जुड़ी आर्थिक और सामाजिक अवसंरचना, होटल, कनेक्टिविटी, मानव संसाधन, स्वास्थ्य सुविधाए ंआदि काफी हद तक विकसित होने की अवस्था में है। इस उदासीनता का मुख्य कारण वित्तीय संसाधनों का अपर्याप्त आवंटन है। ध्यातव्य है कि 2017–2018 के बजट में सरकार ने पर्यटन जैसे एक बड़े क्षेत्रा के केवल 1840 करोड़ रूपये आवंटित किए हैं।
2. देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में फैली गंदगी एवं प्रदूषण एक मुख्य समस्या है। बड़ी संख्या में यूरोपीय देशों के पर्यटक सिर्फ इसलिए भारत आना पसन्द नहीं करते हैं, क्योंकि यहाँ साफ–सफाई और प्रदूषण अन्तर्राष्ट्रीय मानक के प्रतिकूल है।
3. पर्यटकों का सुरक्षा विशेष रूप से विदेशी पर्यटकों की, पर्यटन विकास के मार्ग में एक प्रमुख बाधा रही है। विदेशी नागरिकों पर विशेष रूप से महिलाओं पर हम ले, सामानों की चोरी, दूर–दराज के देशों के पर्यटकों के स्वागत के लिए भारत की क्षमताओं पर कुछ सवाल उठाते हैं। उल्लेखनीय है कि 130 देशों के कराये गये सर्वेक्षण में भारत को वल्र्ड इकोनामिक फोरम सूचकांक 2017 में सुरक्षा पहलुओं के सन्दर्भ में 114 वें स्थान पर रखा गया है।

4. योग, स्वास्थ्य, प्राकृतिक–चिकित्सा एवं साहसिक पर्यटन क्षेत्रा में अपार सम्भावनाओं के होते हुए भी, इन क्षेत्रों पर ध्यान कम दिया गया है।
5. भारत को अपनी सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने में वैसी सपफलता नही मिली जैसा कि पश्चिम के देशों, विशेषकर यूरोपीय देशों को मिली है।
6. देश के अधिकतर पर्यटन स्थलों तक आज भी गरीब, महिला और बुजुर्गों की पहुँच नहीं है। ऐसा यात्राा की उच्च लागत, खराब कनेक्टिविटी और विभिन्न कारणों के लिए आवश्यक अनुमतियों की एक श्रृंखला के कारण होता है।
7. आज भी अधिकांश प्रमुख पर्यटन स्थल हवाई सेवा से नहीं जोड़े जा सके हैं, यह पर्यटन उद्योग के विकास में सबसे बड़ी चुनौती है।
8. जम्मू, लद्दाख, उत्तर–पूर्व एवं कुछ आन्तरिक क्षेत्रा में आतंकवादी और नक्सलवादी घटनाओं से पर्यटन प्रक्रिया बाधित हुई है। फलतः विदेशी पर्यटकों का प्रवाह कम हुआ।

निष्कर्ष :–

निश्चित रूप से भारत ने विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा है। हालिया वैश्विक मंदी हो या आतंकवादी घटनाए, इनमें से कोई भी इक्कीसवीं सदी के आरंभिक वर्षो से शुरू हुई भारत समय के लिए आए ठहराव को छोड़कर विदेशी पर्यटकों की प्रवाह में वृद्धि दर्ज की जाती रही है जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र से वर्ष 2019 में 211661 करोड़ रूपये की विदेशी मुद्रा की कमाई हुई। पर्यटन की सपफलता सुविधाओं के विकास के साथ–साथ मानव का योगदान भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। मानव का आतिथ्य और शिष्टता पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। पर्यटक विभिन्न देशों की यात्राा कर, वहाँ की सभ्यता और संस्कृति को निकट से देखने–समझने अर्थात प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। पर्यटक प्रमुख स्थलों की यात्राा कर देश के पर्यटन उद्योग को समुन्नत बनाने में योगदान देते हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पर्यटन क्षेत्रा में विकास हेतु सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। वर्तमान में पर्यटन से जुड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए अधोलिखित कुछ प्रमुख सुझावों को अमल में लाया जा सकता है–सरकार को पर्यटन क्षेत्रा के संतुलित विकास के लिए निजी क्षेत्रा की भागीदारी को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित करना चाहिए। केन्द्र एव राज्य सरकारों के अतिरिक्त निजी क्षेत्रा के बीच बेहतर सामन्जस्य की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित किया जाना चाहिए। 'अतुल्य भारत' और 'अतिथिदेवोभवः' जैसे स्लोगनों को व्यापक योजनाओं के साथ प्रचारित करना चाहिए। इसके अन्तर्गत बड़ी संख्या में किपफायती होटलों व रेस्टोरेन्ट आदि का निर्माण तथा मनोरंजन हेतु नये विकल्प तैयार किये जाने चाहिए। अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्यटन के नये–नये स्वरू जैसे– एडवेंचर, योग, स्वास्थ्य पर फोकस किया जाना चाहिए। पर्यटन के पुराने केन्द्र (स्थलद्व राज्यों की आय का माध्यम बने हैं, जबकि अपार सम्भावनाओं वाले पर्यटन स्थल आज भी पर्यटकों की जानकारी में नहीं है। अतः इन नये केन्द्रों को पर्यटक मानचित्र पर लाना चाहिए।

सन्दर्भग्रन्थसूची :–

1. सिंह मनीष, के., 2019, पर्यटन भूगोल, बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
2. सिंह मनीष, के., 2008ः गढ़वाल हिमालय में पर्यटन विकास का पर्यावरण पर प्रभाव, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद।
3. बंसल, एस. सी., 2013ः पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबन्धन, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।
4. खुल्लर, डी. आर., 2017ः भूगोल सिविल सेवा, पेज 4.61, मैग्राहिल, एजुकेशन इण्डिया) चेन्नई।
5. तिवारी, आर. सी., 2019ः भारत का भूगोल, प्रवालिका प्रकाशन प्रयागराज।
6. रैना, ए. के., 2005ः इकोलाजी बाइल्ड लाइपफ एण्ड टूरिज्म डेवलपमेण्ट, प्रिन्सिपल एण्ड स्ट्रैटेजी, स्वरूप एण्ड सन्स, नईदिल्ली।
7. इण्डिया टूरिज्म स्टैस्ट्रिस एट ए ग्लांस, 2020, पर्यटन मंत्राालय भारत सरकार
8. भारत 2018, सूचना और प्रसारण मंत्राालय, भारत सरकार।
9. योजना : भारत भ्रमण, मई 2010, वर्ष 54, अंक 5, मई 2010।